राजा मानसिंह तोमर संगीत एवं कला विश्वविद्यालय

स्कूल स्तर गायन एवं स्वर वाद्य पाठ्यक्रम अंक विभाजन

नियमित

2020–21

Madhyama Diploma in performing art- (M.D.P.A.)

Previous

PAPER	SUBJECT VOCAL/INSTRUMENTAL (NONPERCUSSION)	MAX	MIN
1	Theory Music - Theory	100	33
2	PRACTICAL - II Choice Raga Demonstration & Viva	100	33
	GRAND TOTAL	200	66

Madhyama Diploma In Performing Art (M.D.P.A.)

प्रथम वर्ष गायन/स्वरवाद्य
संगीत शास्त्र

समय 3 घण्टे पूर्णांक : 100

1. प्रथमा के पाठ्यक्रम की पुनरावृत्ति।
2. वादी, संवादी, अनुवादी, विवादी, मींड, सूत, घसीट, आंदोलन, कण, बोल–आलाप, तान, बोल–तान।
3. राग की जाति (आडैव, षाडव, सम्पूर्ण) का सामान्य परिचय।
4. ध्वनि, नाद एवं श्रुति की परिभाषा, 22 श्रुतियों के नाम एवं उनमें शुद्ध विकृत 12 स्वरों की स्थापना।
5. गीत के अवयव (स्थायी, अंतरा, संचारी, आभोग)
6. ध्रुपद, धमार, ख्याल, तराना, लक्षणगीत, सरगम (स्वरमालिका) मसीतखानी एवं रजाखानी गतों की संक्षिप्त जानकारी।
7. पं. विष्णु दिगम्बर पलुस्कर एवं पं. विष्णु नारायण भातखण्डे की संक्षिप्त जीवनी एवं सांगीतिक यागेदान।
8. पं. विष्णु दिगम्बर पलुस्कर जी की स्वरलिपि पद्धति का अध्ययन।
9. निम्नलिखित रागों का शास्त्रीय परिचय :– आसावरी, अल्हैया बिलावल, दुर्गा, (बिलावल थाट) वृंदावनी सारंग, देस एवं तिलक कामोद।
10. पाठ्यक्रम के निर्धारित रागों में मध्यलय रचना अथवा रजाखानी गत का भातखण्डे स्वरलिपि में लेखन।
11. ताल के दुगनु एवं चौगुन लय की सामान्य जानकारी।
12. त्रिताल, एकताल, झपताल, चौताल, सूलताल, रूपक एवं तिलवाडा ताल के ठेकों का शास्त्रीय परिचय एव ंउनकाताललिपि में लेखन।

Madhyama Diploma In Performing Art (M.D.P.A.)

प्रथम वर्ष गायन/स्वरवाद्य

प्रायोगिक :– प्रदर्शन एवं मौखिक

समयः– 30 मिनिट पूर्णांक : 100

1. पिछले वर्ष के पाठ्यक्रम की पुनरावृत्ति।
2. पाठ्यक्रम के राग – आसावरी, अल्हैया बिलावल, दुर्गा (बिलावल थाट), वृन्दावनी सारंग, देस, तिलक कामोद।

   (अ) पाठ्यक्रम के रागों में स्वरमालिका, लक्षणगीत का गायन। (गायन के विद्यार्थियों हेतु)

   (ब) पाठ्यक्रम के दो रागों में विलम्बित ख्याल गायन। (वाद्य के विद्यार्थियों हेतु मसीतखानी गत का आलाप तानों एवं तोड़ों सहित प्रदर्शन)

   (स) पाठ्यक्रम के प्रत्येक राग में मध्यलय रचना (ख्याल गायन), रजाखानी गत का आलाप एवं पॉच तानों एवं तोडों सहित प्रदर्शन।

   (द) पाठ्यक्रम के किसी एक राग में ध्रुपद (दुगनु और चौगुन सहित) एक तराना तथा एक भजन अथवा अपने वाद्य पर तीनताल से पृथक अन्य किसी ताल में मध्यलय की रचना का प्रदर्शन।

1. आकाशवाणी द्वारा मान्य वन्दे मातरम् तथा देशभक्ति गीत का स्वरलय में गायन। वाद्य के विद्यार्थियों द्वारा इनका वादन तथा किसी धुन का प्रदर्शन।
2. पाठ्यक्रम के निम्नलिखित तालों का हाथ से तालो देकर दुगुन सहित प्रदर्शन। तीनताल, एकताल, झपताल, चौताल, सूलताल, रूपक एवं तिलवाडा

संदर्भ ग्रंथ

1. हिन्दुस्तानी क्रमिक पुस्तक मालिका भाग 1 से 3 – पं. विष्णु नारायण भातखण्डे
2. संगीत प्रवीण दर्शिका – श्री एल. एन. गुणे
3. राग परिचय भाग 1 से 2 – श्री हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव
4. संगीत विशारद – श्री लक्ष्मीनारायण गर्ग
5. प्रभाकर प्रश्नोत्तरी – श्री हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव
6. संगीत शास्त्र – श्री एम. बी. मराठे
7. अभिनव गीतांजलि भाग 1 से 5 – पं. श्री रामाश्रय झा

Madhyama Diploma in performing art- (M.D.P.A.)

Final

PAPER	SUBJECT VOCAL/INSTRUMENTAL (NONPERCUSSION)	MAX	MIN
1	Theory Music - Theory	100	33
2	PRACTICAL - II Choice Raga Demonstration & Viva	100	33
	GRAND TOTAL	200	66

Madhyama Diploma In Performing Art (M.D.P.A.)
अंतिम वर्ष गायन/स्वरवाद्य
संगीत शास्त्र

समय 3 घण्टे पूर्णांक : 100

1. पिछल पाठ्यक्रम की पुनरावृत्ति।
2. तानों के प्रकार तान व तोडो की परिभाषा तथा तान एवं तोडो में अंतर।
3. पूर्वराग, उत्तरराग, सन्धिप्रकाश एवं परमले प्रवेशक रागों की संक्षिप्त जानकारी।
4. पं. भातखण्डे स्वरलिपि तथा ताल लिपि एवं पं. विष्णु दिगम्बर पलुस्कर जी की स्वरलिपि पद्धति का तुलनात्मक अध्ययन।
5. गायक अथवा वादक (तंत्री वादक/सुषिर वादक) के गुण दाोषों का परिचय।
6. स्वामी हरिदास, राजा मानसिंह तोमर, संगीत सम्राट तानसेन तथा अमीर खुसरो तथा का जीवन परिचय एवं उनका सांगीतिक योगदान।
7. निम्नलिखित रागों का शास्त्रीय परिचय :– बिहाग, केदार, हमीर, बागेश्री, भीमपलासी, जौनपरुी, भैरवी एवं तोडी
8. पाठ्यक्रम के निर्धारित रागों में मध्य लय रचनाओं का भातखण्डे स्वरलिपि में लेखन।
9. चौताल, तीव्रा, तिलवाडा, दीपचन्दी, झूमरा, आडाचौताल और धमार के ठेकों का ठाह, दुगुन एवं चौगुन लयों मेंताललिपि में लिखना।

Madhyama Diploma In Performing Art (M.D.P.A.)

अंतिम वर्ष गायन/स्वरवाद्य

प्रायोगिक :– प्रदर्शन एवं मौखिक

समयः– 30 मिनिट — पूर्णांक : 100

1. पिछले वर्ष के पाठ्यक्रम की पुनरावृत्ति।
2. पाठ्यक्रम के राग– विहाग, केदार, हमीर, बागेश्री, भीमपलासी, जौनपुरी, भरैवी एवं तोड़ी,।
   (अ) पाठ्यक्रम के रागों में स्वरमालिका लक्षणगीत का गायन। (गायन विद्यार्थियों हेतु)
   (ब) पाठ्यक्रम के किन्ही चार रागों में विलम्बित रचना (ख्याल/मसीतखानी) का आलाप, तानों सहित प्रदर्शन।
   (स) पाठ्यक्रम के प्रत्येक राग में मध्यलय रचना (ख्याल/रजाखानी गत) का आलाप एवं पांच तानों सहित प्रदर्शन।
   (द) पाठ्यक्रम के किसी एक राग में ध्रुपद (दुगुन और चौगुन सहित) एक धमार, दो तराने तथा एक भजन अथवा अपने वाद्य पर तीनताल से पृथक अन्य ताल में एकमध्य लय रचना का तानों सहित प्रदर्शन।
3. देशभक्ति गीत का अथवा किसी सुगम संगीत की रचना का स्वरलय में गायन/वादन अथवा अपने वाद्य पर धुन का प्रदर्शन।
4. पाठ्यकम के निम्नलिखित तालों का हाथ से ताली देकर ठाह, दुगनु एवं चौगुन सहित प्रदर्शन। चौताल, तीव्रा, तिलवाडा, दीपचन्दी, झूमरा, आड़ाचौताल और धमार।

संदर्भ ग्रंथ

1. हिन्दुस्तानी क्रमिक पुस्तक मालिका भाग 1 से 3 – पं. विष्णु नारायण भातखण्डे
2. संगीत प्रवीण दर्शिका – श्री एल. एन. गुणे
3. राग परिचय भाग 1 से 2 – श्री हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव
4. संगीत विशारद – श्री लक्ष्मीनारायण गर्ग
5. प्रभाकर प्रश्नोत्तरी – श्री हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव
6. संगीत शास्त्र – श्री एम. बी. मराठे
7. अभिनव गीतांजलि भाग 1 से 5 – पं. श्री रामाश्रय झा